हिन्दी भक्त-वार्ता साहित्य

लेखक

डॉ० लालता प्रसाद दुबे

एम० ए०, डी० फ़िल,

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग

फिरोज़गाँधी कॉलेज, रायबरेली

寄贈 昭和46年度科学研究費購入図書 東外大・東洋文化研 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 157821 17.3.31 図書館蔵書

प्रकाशक

साहित्य सदन, देहरादून

विषय-सूची

अध्याय १ : नाभादास के पूर्व का भक्त-वार्ता साहित्य १–४२

(क) **पूर्ववर्ती भक्तमाल**—(१) जगाकृत "भक्तमाल", रचनाकाल, जगाकृत भक्तमाल में आए हुए भक्तों की सूची, महत्व (२) चैनजी का "भक्तमाल", रचनाकाल, वर्णनक्रम, मूल्यांकन (३) भगवत मुदितकत "रसिक अनन्यमाल", भगवत, मुदित का संक्षिप्त परिचय, रचनाएँ, रसिक अनन्यमाल का संक्षिप्त परिचय (ख) "**अनन्त दास की परिचयियाँ**", रचनाकाल, गुरु परंपरा (ग) **अन्य रचनाएँ**—(१) "व्यासवाणी" में उपलब्ध भक्तों की नामावली, व्यास जी, जन्मकाल, गुरु, कविताकाल, निकुञ्जगमन, व्यास जी का चरित्र और स्वभाव, ग्रन्थ, व्यासवाणी में उल्लिखित भक्तों की नामावली, भक्तमाल से तुलना, निष्कर्ष, अन्तर, मूल्यांकन (२) परशुराम देवाचार्य का "परशुरामसागर", रचनाकाल, भक्तों का उल्लेख (३) माधौदास का "संत गुणसागर" (४) गिरिधर का "भक्तिमाहात्म्य"–ग्रन्थकार का परिचय–ग्रंथ परिचय–रचनाकाल, विशेषता ।

अध्याय २ : नाभादास एवं उनका भक्तमाल ४३–९३

नाभादास जी की गुरु परंपरा, जन्म संवत्, जन्म स्थान, माता-पिता एवं जाति, बाल्यावस्था, गुरु, नाभादास का निधनकाल, भक्तमाल का वर्ण्य विषय, कलियुग के भक्तों का वर्णन, ग्रंथ नाम संबंधी विवाद, छप्पय संख्या, रचनाकाल, वर्णन का छंद रचना क्रम, भक्तमाल के अलौकिक तथा अतिरंजनापूर्ण वर्णन, वर्णनशैली की विशेषता, भक्तमाल में रसिक साधना, ऐतिहासिकता, मूल्यांकन, परिचयियों और भक्तमाल का तुलनात्मक अध्ययन, "रसिक अनन्य-माल" तथा भक्तमाल का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कर्ष ।

अध्याय ३ : नाभादास के पश्चात् का भक्त-वार्ता साहित्य ९४–१८८

"**भक्तमाल**" (१) **राघोदासकृत**, राघोदास का संक्षिप्त परिचय, गुरु, रचनाकाल, वर्ण्य विषय, छंद तथा उनकी संख्या, आधार, नाभा-दास तथा राघोदास के भक्तमालों का तुलनात्मक अध्ययन, अंतर, निष्कर्ष राघोदास कृत भक्तमाल के कुछ विचारणीय उल्लेख,

राघोदास के भक्तमाल की मौलिकता, चरित्र वर्णन की विशेषताएँ, (२) चारण ब्रह्मदासकृत "भक्तमाल" (३) उत्तमदासका "रसिकमाल" रसिकमाल में वर्णित चरित्र, हितजी की जीवनी, अन्य संतों का वर्णन, आधार, (४) जयकृष्णकृत "हितकुलशाखा" महत्व, प्रियादास की टीका तथा उत्तमदास के "हितचरित्र" की तुलना, (५) चंददासकृत "भगतबिहार", कथाक्रम, रचनाकाल, चंददास का "भगत बिहार" और नाभादासका भक्तमाल, "भगत-बिहार" तथा प्रियादास की टीका, निष्कर्ष, "भगत बिहार" और अनंतदास की परिचयियाँ, अंतर, निष्कर्ष, (६) रामदासजी का "भक्तमाल", रामदास का संक्षिप्त परिचय, मृत्यु, रचनाएँ, रचनाकाल, भक्तमाल, रामदास तथा नाभादास के भक्तमालों का तुलनात्मक अध्ययन, अन्तर, रामदासका भक्तमाल तथा प्रियादास की टीका, (७) सांवतराम कृत "भक्तमाल" भक्तनामावलियाँ, (१) ध्रुवदास की "भक्तनामावली", "ध्रुवदास के दीक्षागुरु", जन्म संवत्, वृन्दावनवास, "भक्तनामावली" तथा उसका रचनाकाल, भक्तमाल और "भक्त-नामावली" की तुलना (२) क्षेमदासकृत "भक्त पचीसी" क्षेमदास का परिचय, रचनाएँ, भक्तपचीसी (३) मलूकदास "ज्ञानबोध" तथा "भक्तबछल" (४) नागरीदास की "पदप्रसंगमाला", नागरी-दास का परिचय, ग्रन्थ, रचनाकाल, निधन काल, पदप्रसंगमाला, नाभा-दास के भक्तमाल और पदप्रसंगमाला की तुलना, प्रियादास की टीका और नागरीदास के "पदप्रसंगमाला" का तुलनात्मक अध्ययन, (५) संत भीखादास का "राज हिंडोला" (६) भगवत रसिक का "निश्चयात्मक ग्रंथ उत्तराधे" (७) लघुजनकृत "भक्तमाल संत सुमिरनी"–संक्षिप्त परिचय, रचनाकाल, विशेषताएँ, (८) चैनारा-यणकी "भक्त सुमिरिनी" (९) दयालदास का "करुणासागर" रचनाएँ, रचनाकाल करुणासागर, "करुणासागर" तथा नाभादास कृत भक्तमाल का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कर्ष, "करुणासागर" की विशेषताएँ, (१०) भगत कृत "भगत चालीसा", सुधा-मुखीकृत "भक्तनामावली" या "हरिजन जसावली" (१२) राधावल्लभ सम्प्रदाय की अन्य भक्तनामावलियाँ–वृन्दावनदास रचनाकाल, रचनाएँ, "रसिक अनन्य परिचावली", (१३) गो० चंद्रलालकृत "वृन्दावन प्रकाशमाला", गोविंद अलिकृत "रसिक अनन्यगाथा"।

अध्याय ४ : नाभादास तथा उनके परवर्ती भक्तमालों की टीकाएँ तथा टिप्पणियाँ १८९–२४५

(क) नाभादास के भक्तमाल की टीकाएँ तथा टिप्पणियाँ—(१) प्रियादास की टीका "भक्ति रस बोधिनी", प्रियादास तथा टीका की प्रेरणा, टीका का नाम, रचनाकाल, अन्य रचनाएँ, योजना, टीका का मुख्य आधार, सामूहिक वर्णन वाले छप्पय, भक्तमाल के अतिरिक्त नवीन भक्तों से संबद्ध नवीन घटनाए, निष्कर्ष, विवेचना, टीकाकार की भूलें–टीका का महत्व, (२) अनंतदास की "परिचयियों" तथा प्रियादास की टीका का तुलनात्मक अध्ययन, (३) प्रियादास की टीका तथा "रसिक अनन्यमाल" का तुलनात्मक अध्ययन (४) भक्त-माल तथा प्रियादास की टीका पर वैष्णवदास की "टिप्पणी", टिप्पण का रचनाकाल, (५) जमाल की "टिप्पणी", (६) भक्तमाल पर प्रिया-दास की टीका का लालचंद्रदासकृत उर्दू अनुवाद "भक्त उर्वशी", (७) अन्य टीकाकार तथा टीकाएँ, भक्तमाल पर बालकराम की "टीका", रचनाकाल।

(ख) नाभादास के परवर्ती भक्तमालों की टीकाएँ तथा टिप्प-णियाँ, (१) राघोदास के भक्तमाल पर चतुरदास की "टीका", टीका का रचनाकाल, छंद तथा परिमाण, टीका का मूलाधार, प्रियादास तथा चतुरदास की टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्याय ५ : बीतक तथा परवर्ती परिचयियाँ २४६–२८०

(क) बीतक, "बीतक साहित्य, लालदास रचित बीतक", प्राणनाथ जी का जीवनवृत्त, ऐतिहासिक समीक्षा, बीतकों का महत्व।

(ख) परवर्ती परिचयियाँ, (१) श्री दादूजन्मलीला परची : जनगोपालकृत, जनगोपाल के माता, पिता तथा जन्मकाल, ग्रंथ का रचनाकाल, परची का सारांश, दादू का जन्मकाल, माता, पिता, जाति, गुरु–परम्परा निष्कर्ष, (२) षेमदासकृत "गोपीचंद बैरागबोध", रचना-काल, (३) हरिदास की "परिचयी" : रघुनाथदासकृत–परिचय–ग्रंथ का रचनाकाल–परिचयी के आधार पर हरिदास का संक्षिप्त जीवन चरित, जन्म तथा मृत्यु–दीक्षागुरु, रचनाएँ, परंपरा, निष्कर्ष (४) "स्वामी सेवादास की परिचयी" : रूपदासकृत, परिचयी का सारांश, ग्रंथ का रचनाकाल, गुरु, मृत्यु, ग्रन्थ की परंपरा (५) चरनदास की "परिचयी" : रामरूपकृत, रामरूप का परिचय, वर्ण्य विषय, परिचयी का सारांश (६) जगजीवन साहेब की "परिचयी" :

बोधेदासकृत–जाति और दीक्षागुरु, परिचयी का संक्षिप्त परिचय, छंदसंख्या, संक्षिप्त जीवनी, जन्मकाल, मातापिता, अन्यप्रसंग परंपरा, (७) श्री रामदासजीकी : परिचयी, वक्ता दयालबाल, लेखक परशुराम, परिचयी का रचनाकाल, परंपरा (८) मलूकदास की परिचयी : सुथरादासकृत, सुथरादास का संक्षिप्त परिचय, परिचयी के आधार पर मलूकदास का संक्षिप्त परिचय, जन्मस्थान, माता-पिता, गुरु, रचनाएँ, रचनाकाल, परम्परा निष्कर्ष, (९) सिंगाजी की 'परचुरी' षेमकृत

अध्याय ६ : पुष्टिमार्ग की भक्तवार्ताएँ तथा उनकी टीकाए २८१–३८४

(१) चौरासी तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ताएँ— (क) "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" (ख) "दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता", (२) "भावसिंधु की वार्ता", संक्षिप्त परिचय, अन्य संगतियाँ, (३) चौरासी वैष्णवन की वार्ता में आचार्य जी के शिष्य, निष्कर्ष (४) चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कर्ष, परिशिष्ट, (५) अनंतदास की परिचयी और चौरासी तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ताएँ निष्कर्ष, (६) "रसिक अनन्यमाल" तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ताएँ, निष्कर्ष, (७) नाभादास के भक्तमाल और चौरासी वार्ताओं की तुलना, (८) नाभादास कृत भक्तमाल और दो सौ बावन वार्ताओं की तुलना, निष्कर्ष, अन्तर दो सौ बावन वार्ता के इतर प्रसंगों की भक्तमाल से समानता, निष्कर्ष, परिणाम, (९) राघोदास का भक्तमाल तथा वार्ताएँ, निष्कर्ष, (१०) प्रियादास की टीका और चौरासी वैष्णवन की वार्ता की तुलना, दोनों रचनाओं में वही नाम और वही वार्ताएँ- दोनों रचनाओं में दूसरे नाम किन्तु वही वार्ताएँ, दोनों रचनाओं में वही नाम किन्तु दूसरी वार्ताएँ, (११) प्रियादास की टीका तथा २५२ वैष्णवन की वार्ता का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कर्ष, (१२) "पदप्रसंगमाला", "गोविन्दपरिचयी" तथा वार्ताओं का तुलनात्मक अध्ययन, (क) पदप्रसंगमाला तथा चौरासी वैष्णवन की वार्ता, (ख) पदप्रसंगमाला तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वर्ता, (ग) प्रियादास की टीका, गोविन्द "परिचयी" तथा २५२ वैष्णवन की वार्ताएँ, निष्कर्ष, (१३) वार्ताओं पर हरिराय की तथा-कथित टीका "भावप्रकाश", (हरिराय का जन्म तथा माता-पिता, दीक्षा-गुरु, रचनाएँ, नियम, भावप्रकाश, निष्कर्ष ।

उपसंहार ३८५–३८८

सहायक पुस्तकों की सूची ३८९–३९५

अनुक्रमणिका ३९६

अध्याय : १ :

नाभादास के पूर्व का भक्त-वार्ता साहित्य

नाभादास जी के पूर्व भक्तमाल अथवा भक्त नामावलियों की परम्परा वर्तमान थी, इसकी सूचना उनके निम्नांकित दोहे से मिलती है—

भक्तमाल जिन जिन कथी, तिनकी जूठनि पाय ।
मो मतिसार अक्षर द्वै, कोनो सिलौ बनाय[1] ॥

यद्यपि नाभादास से पूर्व का कोई भक्तमाल ऐसा नहीं मिलता जो उनके द्वारा रचित भक्तमाल की शैली में हो, किन्तु दो दादूपंथी और एक राधावल्लभी भक्तमाल ऐसे प्राप्त हुए हैं जिन्हें उनका पूर्ववर्ती अथवा समसामयिक माना जा सकता है[2] । दादूपंथी भक्तमालों में से एक के रचयिता दादू के शिष्य जगा जी तथा दूसरे के उनके प्रशिष्य चैन जी हैं । तीसरे अर्थात् "रसिक अनन्यमाल" के रचयिता भगवत मुदित हैं । यद्यपि दादूपंथी ग्रंथकारों ने ग्रंथ के अंत में इनको भक्तमाल की संज्ञा से अभिहित किया है किन्तु इन्हें अधिक से अधिक "भक्त नाममाला" कहा जा सकता है। "रसिक अनन्यमाल" में भक्तों के परिचय अवश्य विस्तार से दिए हुए हैं । इन भक्तमालों के अतिरिक्त अनंतदास ने अनेक परिच-

१. भक्तमाल रूपकला सटीक छं० सं० ३१३ ।

२. दोनों भक्तमाल दादू महाविद्यालय, मोती डूंगरी जयपुर के संग्रह से मगलदास स्वामी द्वारा प्राप्त हुए हैं । दोनों अब राघवदासकृत भक्तमाल के साथ प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा प्रकाशित हो गये हैं ।